लेवी जीन्स
की कहानी

आपको किस तरह की जीन्स पसंद है? नीली जीन्स एक सूती कपड़े से बनी पैंट होती है जिसे डेनिम कहा जाता है. डेनिम लचीला होने के साथ-साथ काफी मजबूत भी होता है.

कभी-कभी नीली जीन्स पर हीरे जड़े होते हैं. कुछ लोग शॉर्ट्स (नेकर) बनाने के लिए अपनी जीन्स को घुटनों तक काट देते हैं. कुछ लोग नीली जीन्स का एक चोंगा पहनते हैं. कुछ लोग नीली जीन्स को कई रंगों में रंगना पसंद करते हैं. कुछ लोगों अपनी जीन्स के घुटनों में छेद काटते हैं! कुछ लोग अपनी जीन्स की किनार में झालर काटते हैं.

क्या आप जानना चाहेंगे कि इन पैंटों को किसने इतना लोकप्रिय बनाया? उसका नाम लेवी स्ट्रॉस था, और यह उसी की कहानी है.

लेवी स्ट्रॉस का जन्म 1829 में दक्षिणी जर्मन गांव ब्यूटेनहेम में हुआ था. जन्म के समय उनका पहला नाम लोएब था, लेकिन बाद में उसने उसे बदलकर लेवी कर दिया. स्ट्रॉस के पिता कपड़ा, रेडीमेड कपड़े, सुई और कैंची जैसा सामान बेंचते थे.

1830 के दशक के उत्तरार्ध में, लेवी स्ट्रॉस के दो भाई, जोनास और लुई, अमेरिका चले गए. वहां वे अपना खुद का व्यवसाय शुरू करना चाहते थे. 1845 में, लेवी स्ट्रॉस के पिता का निधन हो गया. उसके तुरंत बाद, लेवी ने भी जर्मनी छोड़ दिया और अमेरिका में अपने भाइयों के साथ आकर मिल गया.
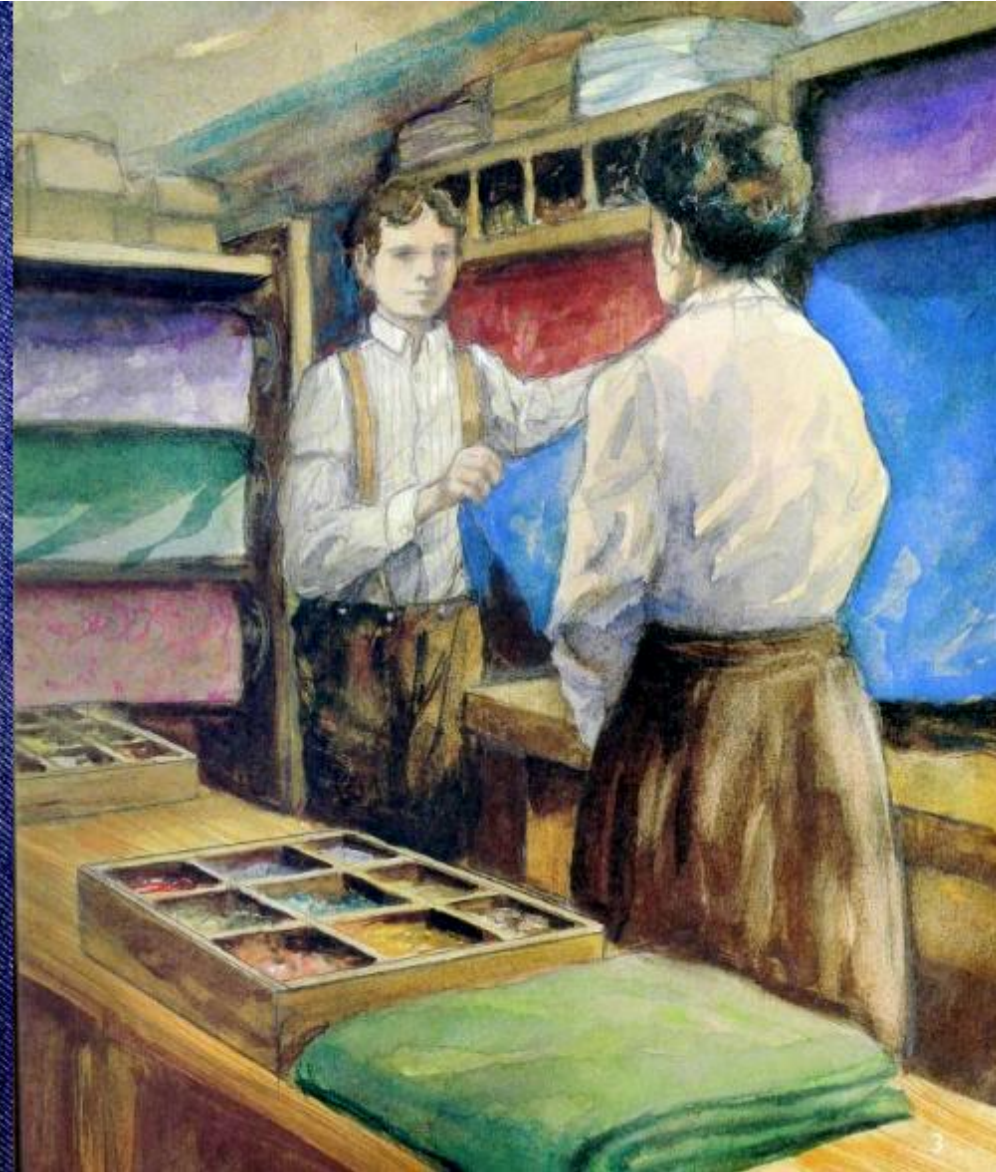
स्ट्रॉस, 1847 में न्यूयॉर्क पहुंचा. उसके भाइयों ने "जे. स्ट्रॉस ब्रदर्स एंड कंपनी" नामक एक व्यवसाय शुरू किया था. उनका धंधा अपने पिता की तरह ही था. लेवी स्ट्रॉस ने इस व्यापार को सीखा. उसके बाद उसने अपना खुद का कारोबार शुरू करने का मन बनाया.

कई सालों तक, स्ट्रॉस ने केंटकी में कपड़ा आदि बेचा. उसने पैदल सेल्समैन जैसे घर-घर जाकर सामान बेंचा.

पर कुछ सालों के बाद, स्ट्रॉस ने शहर बदलने का फैसला किया. उसने महान कैलिफ़ोर्निया गोल्ड-रश के बारे में सुना था. लोग सोने की तलाश में कैलिफ़ोर्निया जा रहे थे. 1848 में कैलिफोर्निया में सोने की खोज हुई थी. हजारों खनिक वहां अपनी किस्मत आज़माने और दौलत कमाने जा रहे थे रहे थे. क्योंकि कई खनिक 1849 में आए थे, उन्हें फोर्टी-नाइनर्स कहा जाता था. स्ट्रॉस की सोने की खोज में कोई रूचि नहीं थी. उसने दूसरे तरीके से कमाई करने की सोची.

वो कैलिफोर्निया में खनिकों को सामान बेंचना चाहता था. वो अपने व्यवसाय को उस स्थान पर ले गया जहाँ सबसे अधिक ग्राहक था. स्ट्रॉस बहुत स्मार्ट था. आप आगे देखेंगे कि स्ट्रॉस की यह पहल बड़ी ज़बरदस्त थी.

हालांकि यह कदम उठाने के लिए, स्ट्रॉस को एक लंबी यात्रा करनी पड़ी. उसने 1853 में न्यूयॉर्क से सैन-फ्रांसिस्को तक की यात्रा की. उस समय कैलिफोर्निया तक की यात्रा आसान नहीं थी. क्योंकि स्ट्रॉस विमानों और ट्रेनों से पहले के काल में यात्रा कर रहा था.

उस ज़माने में कई लोग अमरीका में पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक की यात्रा नावों / जहाज़ों से करते थे. क्या आप कल्पना कर सकते हैं? उसके लिए जहाजों को दक्षिण अमेरिका की नोक, केप हॉर्न से होकर गुज़ारना पड़ता था. जब जहाज प्रशांत महासागर से उत्तर की ओर जाते तो यात्रियों को अक्सर समुद्री तूफानों का सामना करना पड़ता था. तब कुछ यात्रियों की बीमारी या भुखमरी से मृत्यु हो जाती थी. स्ट्रॉस इस यात्रा में बच गए और फिर वो सैन-फ्रांसिस्को में बस गए.

NORTH AMERICA
उत्तरी अमरीका
ATLANTIC OCEAN
अटलांटिक महासागर
SOUTH AMERICA
दक्षिणी अमरीका

सौभाग्य से, स्ट्रॉस का परिवार भी सैन फ्रांसिस्को में था. उसकी बहन फैनी और उनके पति डेविड स्टर्न पहले ही वहां बस गए थे. उन्होंने स्ट्रॉस की इस नए शहर में बसने में मदद की. स्टर्न और स्ट्रॉस ने मिलकर एक स्टोर भी खोला. स्टोर, बंदरगाह के पास था और वो उसमें सूखा सामान बेचते थे. स्टोर का कुछ सामान न्यूयॉर्क में स्ट्रॉस के भाई भेजते थे. बिक्री के सामान में खनिकों के लिए कपड़े भी शामिल थे. उन्होंने अपने नए व्यवसाय का नाम "लेवी स्ट्रॉस" रखा.

स्ट्रॉस की कंपनी ने अच्छा प्रदर्शन किया. सोने की भीड़ के कारण सैन-फ्रांसिस्को शहर अभी भी फलफूल रहा था. कुछ साल पहले तक सैन-फ्रांसिस्को, एक हजार से भी कम नागरिकों का एक छोटा व्यापारिक क़स्बा था. पर जहाज़ों के आने के बाद सोने की तलाश में आने वाले लोगों से शहर भरा गया. उनमें से कई को "खोजी" कहा जाता था. वो सोने की धूल से भरी थैलियों या डलियाँ इकट्ठी करके अपना सफल भविष्य बनाते थे.

अक्सर सोना खोज पाने वाले लोग सैन-फ्रांसिस्को में ही बस जाते थे. 1850 तक, शहर में लगभग 25,000 लोग बस गए थे. स्ट्रॉस आने से पहले कई नवागंतुक टेंट या लकड़ी के अस्थाई घरों में रहते थे. जब तक स्ट्रॉस सैन-फ्रांसिस्को पहुंचा, तब तक धनी लोग बड़े घरों में रहने लगे थे.

पर सोने की भीड़ लगातार ज़ारी नहीं रही. जब स्ट्रॉस ने अपना व्यवसाय शुरू किया तब तक खनिक कम सोना खोज पा रहे थे. लेकिन फिर भी लोग कैलिफोर्निया आ रहे थे. वे स्ट्रॉस से सामान भी खरीदते थे. स्ट्रॉस के सैन-फ्रांसिस्को के बाहर भी ग्राहक थे. कई बार, वह पास के पहाड़ों में छोटे खनन शहरों में सामान लेकर बेंचने जाता था. स्ट्रास, खदानों के पास वाले स्टोरों को भी माल सप्लाई करता था. इन दुकान मालिकों को स्ट्रॉस पर भरोसा था. उन्हें पता था कि वो उन्हें उचित मूल्य पर अच्छी क्वालिटी का माल देगा.



स्ट्रॉस का कारोबार लगातार बढ़ता गया. फिर उसने अपने स्टोर को एक बड़े और बेहतर स्थान पर स्थानांतरित किया. 1863 में, स्ट्रॉस ने स्टोर का नाम बदलकर "लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी" कर दिया. तीन साल बाद, उसने स्टोर को फिर से स्थानांतरित किया.

कम्पनी का नया मुख्यालय पुराने की तुलना में कहीं बड़ा और भव्य था. नई इमारत में गैस से चलने वाली फैंसी लाइटें थीं. इसमें एक एलिवेटर यानी लिफ्ट भी थी. उस समय बहुत कम इमारतों में ही लिफ्ट थी. स्ट्रॉस का धंधा अब बहुत अच्छा चल रहा था. पर जल्द ही उसे एक बड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा.
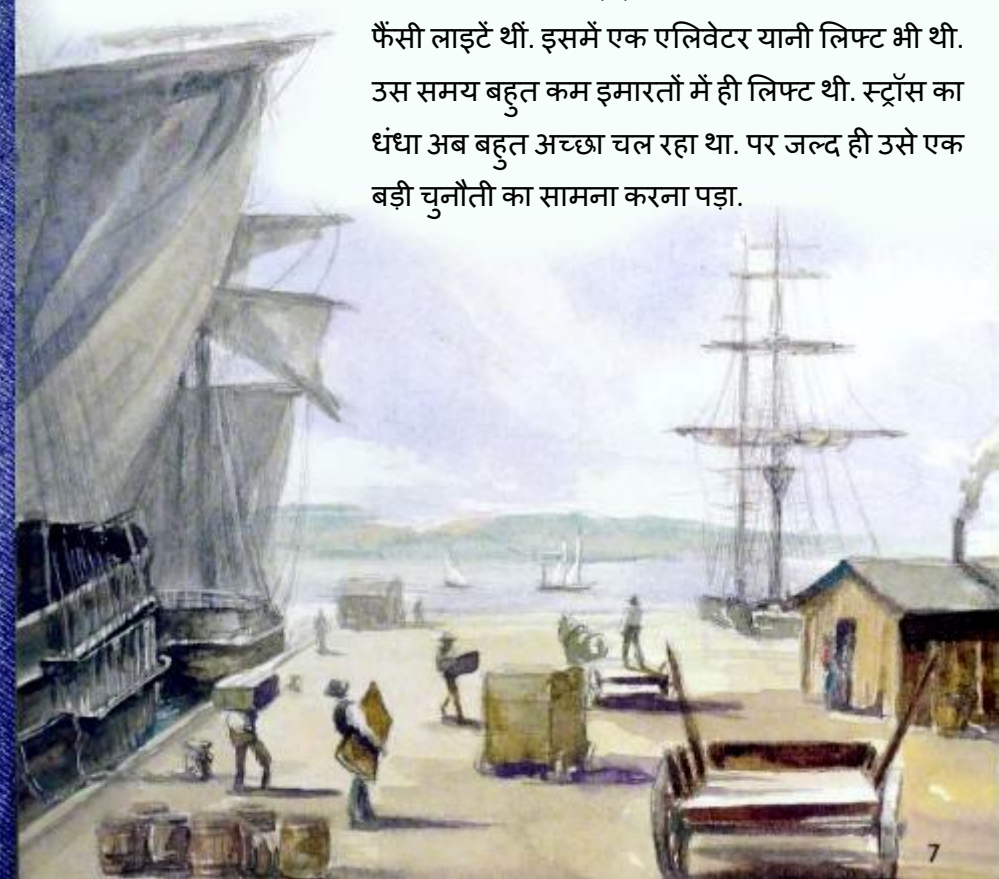
कैलिफोर्निया एक लंबे समय से अपने भूकंपों के लिए प्रसिद्ध है. सैन फ्रांसिस्को खुद पृथ्वी में एक "फाल्ट" यानि दरार के पास बसा है, जहां अक्सर भूकंप आते हैं. 1865 में स्ट्रॉस ने अपना पहला भूकंप महसूस किया, लेकिन उससे ज्यादा नुकसान नहीं हुआ. पर 1868 में एक ज़ोरदार भूकंप ने पूरे शहर को हिला दिया.
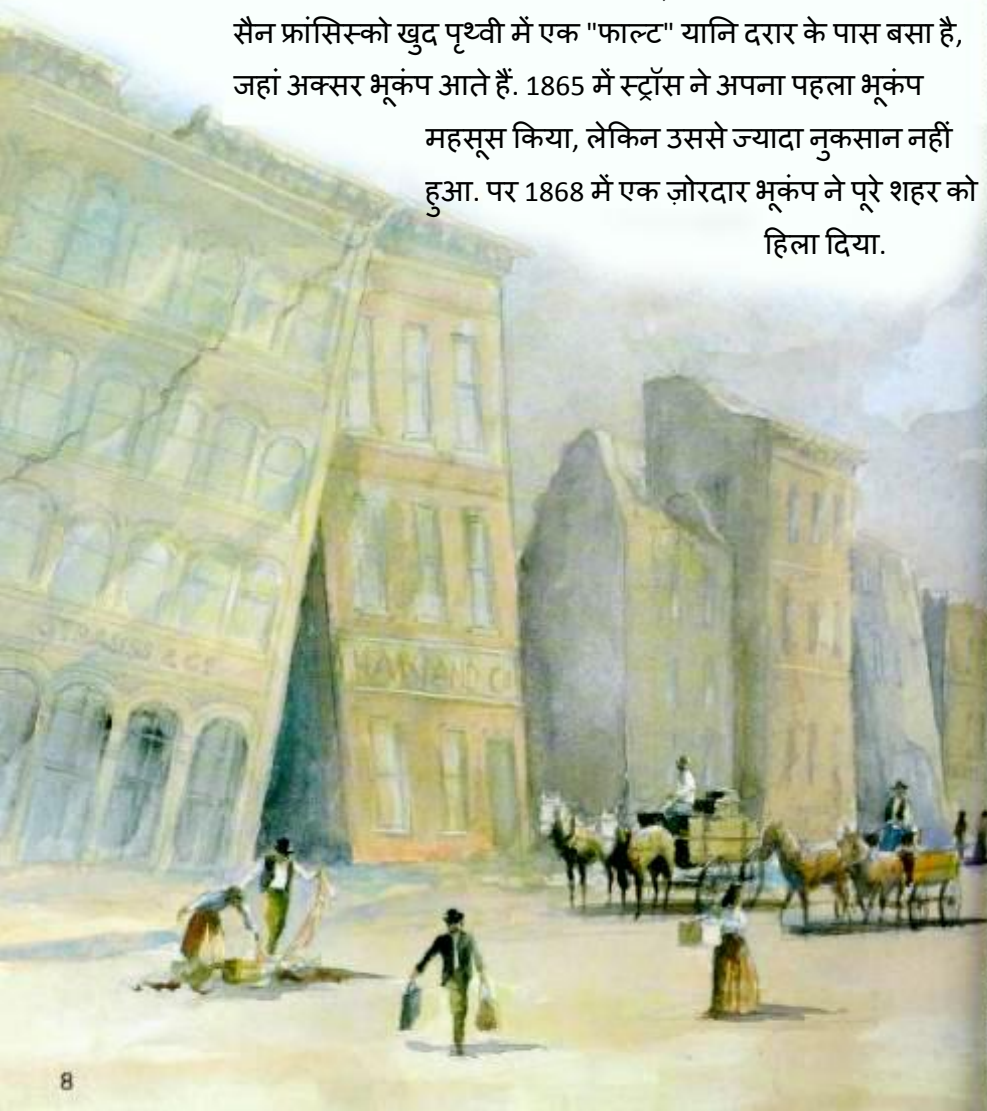
भूकंप दो लहरों में आया. दूसरी लहर सबसे अधिक घातक थी. इमारतों के हिलने से लोग सड़कों पर भागे. कुछ इमारतें ढह कर जमीन पर गिर गईं, जिससे आस-पास के तमाम लोग मारे गए. भूकंप में कई लोग मारे गए. भाग्यवश, स्ट्रॉस के परिवार में किसी को भी चोट नहीं पहुंची, लेकिन उनकी कंपनी की इमारत को भारी नुकसान पहुंचा. एक अखबार के अनुसार स्टोर की इमारत "बीच में से फट गई."

स्ट्रॉस ने अपने कर्मचारियों की मदद से स्टोर के सामान को क्षतिग्रस्त इमारत से बाहर निकाला. फिर इमारत की मरम्मत करवाई और जल्द ही स्टोर दुबारा से व्यापार के लिए खोला. स्ट्रॉस ने भूकंप को अपना व्यवसाय बंद करने नहीं दिया.

अब तक, स्ट्रॉस समुदाय का एक महत्वपूर्ण सदस्य बन चुका था. वह कई चैरिटी समूहों के काम में भी शामिल था. उसने कैलिफोर्निया के पूर्वी तट पर बसने में यूरोपीय और अमेरिकियों की मदद भी की. 1873 में, वह समुदाय का अधिक महत्वपूर्ण सदस्य बन गया.

1872 में, स्ट्रॉस को जैकब डेविस का एक पत्र मिला. डेविस रेनो, नेवादा में एक दर्जी था, जिसने कभी स्ट्रॉस से कपड़ा खरीदा था. डेविस जानता था कि स्ट्रॉस एक सफल और ईमानदार व्यवसायी था. डेविस को एक नए प्रोजेक्ट में स्ट्रॉस की मदद की जरूरत थी.

रेनो शहर के पास कई खदानें थीं. डेविस खदान मज़दूरों के लिए काम के समय पहनने वाली पैंट बनाता था. इसके लिए वो एक सूती कपड़ा "डक" क्लॉथ उपयोग करता था. कभी-कभी वो पैंट बनाने के लिए नीली डेनिम का इस्तेमाल भी करता था. एक दिन एक महिला ने अपने पति के काम के समय पहनने वाली पतलून के बारे में शिकायत की. उसके अनुसार काम के समय पतलून बहुत जल्दी फट जाती थी, खासकर जेब के पास से. फिर जब डेविस ने उस महिला के पति की अगली जोड़ी पैंट बनाई, तो उसके दिमाग में एक विचार आया. इस बार उसने जेब में कपड़े के पास मेटल (धातु) के रिवेट्स उपयोग किए. रिवेट्स, सादे धागे की तुलना में बहुत मजबूत साबित हुए.

डेविस के इस नए आईडिया ने बढ़िया काम किया. अन्य खनिकों ने भी रिवेट्स वाली पैंट देखी और फिर उन्होंने भी उसी तरह की पतलूनों की मांग की. डेविस ने एक साल से भी कम समय में इन पैंटों की 200 जोड़ियां बेचीं. क्योंकि वो पैंट कितनी लोकप्रिय हुईं इसलिए डेविस वैसी पतलूनें बड़ी तादाद में बनाना चाहता था. वो यह भी सुनिश्चित करना चाहता था कि कोई आदमी उसकी पैंट के डिज़ाइन की नक़ल न करे. इसके लिए उसे एक पेटेंट की जरूरत थी. पेटेंट एक कानूनी दस्तावेज होता हो जो अन्य लोगों को किसी के नए आविष्कारक को चुराने से रोकता है. पर पेटेंट को रजिस्टर कराने के लिए काफी पैसा खर्च करना पड़ता है. डेविस की औकात पेटेंट लेने की नहीं थी. इसलिए उसने पेटेंट के लिए लेवी स्ट्रॉस से मदद मांगी.

डेविस, स्ट्रॉस को पेटेंट के लिए भुगतान करना चाहता था, जिसकी कीमत $ 68 थी. तब दोनों आदमी पार्टनर बन सकते थे. वे पैंट की बिक्री से होने वाले मुनाफे को साझा कर सकते थे. स्ट्रॉस जल्द ही समझ गया कि पतलूनों में रिवेट्स लगाने का आईडिया एक उत्कृष्ट विचार था. फिर वो पेटेंट प्राप्त करने के लिए डेविस के साथ काम करने के लिए सहमत हुआ.



पेटेंट प्राप्त करना कोई सरल काम नहीं था. पेटेंट प्राप्त करने के लिए, किसी आविष्कारक को अमेरिकी सरकार के सामने यह साबित करना होता कि वो आईडिया उसका अपना मौलिक विचार था और उसने किसी और की नक़ल नहीं की थी.

पहले, सरकार ने डेविस के पेटेंट के अनुरोध को ठुकरा दिया. एक अन्य कंपनी ने गृहयुद्ध के दौरान सैनिकों के लिए बनाई वर्दीयों में धातु के रिवेट्स का इस्तेमाल किया था. अंत में, डेविस और स्ट्रॉस ने सरकार को आश्वस्त किया कि उनका यह विचार एकदम नया और अलग था. फिर 20 मई 1873 को उन्हें पेटेंट मिला.

उसके बाद कुछ हफ्तों के अंदर ही लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी ने रिवेट्स वाली अपनी पैन्ट्स की पहली जोड़ी बेची. पर एक साल में स्ट्रॉस रिवेट्स जेबों वाली 20,000 से ज़्यादा पैंट और कोट बेच पाया.

लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी ने रिवेट्स कपड़ों को बनाने के लिए नए कारखाने स्थापित किए. जैकब डेविस ने कारखानों को चलाया. दुकान में "कटर" नामक एक व्यक्ति मोटे कपड़े को एक लंबे चाकू से काटता था. फिर उन कपड़े के टुकड़ों को महिलायें सिलाई मशीनों का इस्तेमाल करके पैंट में सिलती थीं.

स्ट्रॉस की पैंट अच्छे डिजाइन की थीं और लंबे समय तक चलने वाले कपड़े की बनी थीं. उसने जिस "डेनिम" का इस्तेमाल करता है वह कहां से आया? वैसे, "डेनिम" शब्द फ्रेंच शब्द "डे नीम्स" से आया है. इसका मतलब है "नीम्स से."

फ्रांस का शहर निम्स कभी मजबूत नीली कपास सामग्री के लिए मशहूर था.

पर स्ट्रॉस को अपने कपड़े के लिए फ्रांस नहीं जाना पड़ा. न्यू-हैम्पशायर की एक कपड़ा मिल ने गृह-युद्ध के बाद से डेनिम बनाना शुरू किया था. इस मिल ने स्ट्रॉस की नीली जीन्स के लिए डेनिम कपड़ा बनाने का काम किया.

उस समय किसी ने रिवेटेड पैंट को "नीली जीन्स" नहीं कहा. स्ट्रॉस ने उन्हें "कमर चोग़ा" कहा.

पश्चिम के लोगों ने स्ट्रॉस के कपड़े खूब खरीदे. कंपनी के विज्ञापनों में कभी-कभी काउबॉय को डेनिम का चोगा पहने हुए दिखाया जाता था. कनाडा और कई अन्य देशों में अब स्ट्रॉस के कपड़े बिकने लगे. उसकी कंपनी का बहुत विस्तार हुआ और वो बहुत प्रसिद्ध भी हुई.

स्ट्रॉस ने अपनी पैंट पर एक विशेष ट्रेडमार्क लगाया, जिससे हरेक को यह पता चले कि वो पैंट स्ट्रॉस ने बनाई थी. पिछली जेब में नारंगी रंग की दो रेखाएं सिलीं गईं थीं. वे रेखाएं समुद्री-चील (सी-गल) या अंग्रेजी के अक्षर "V" जैसी दिखती थीं. लेवी जीन्स का आज भी वही ट्रेडमार्क है.

1880 के दशक में, स्ट्रॉस ने चमड़े से बने एक लेबल को पैंट के पीछे जोड़ा. इसमें दो घोड़ों को डेनिम चोगे की एक जोड़ी को खींचते हुए दिखाया गया था. "इसका कोई फायदा नहीं होगा," लेबल पर लिखा था. "सिलाई को फाड़ना असंभव है." अगर पैंट की सिलाई उधड़ी तो कंपनी ने ग्राहकों को एक नई जोड़ी देने का वादा किया. कुछ लोगों ने स्ट्रॉस की पैंट को "टू-हॉर्स ब्रांड" का नाम दिया.

अपनी पैंट की बदौलत, स्ट्रॉस सैन-फ्रांसिस्को के सबसे अमीर व्यक्तियों में से एक बन गया. उसने अपने कारखानों के साथ शहर में एक होटल और अन्य इमारतें भी खरीदीं. उसने अपनी खुद की ऊन मिल भी स्थापित की. वहां वो कपड़े बनाने के लिए ऊन बनाता था. ऊन से बने कपड़े लोगों को गर्म रखते थे.

जैसा-जैसा स्ट्रॉस बूढ़ा हुआ, उसने खुदको अपने व्यवसाय से अलग किया. उसके भतीजों ने कंपनी की दैनिक जरूरतों का ध्यान रखा. तब स्ट्रॉस ने अन्य कंपनियों पर अधिक ध्यान दिया. वो कई कंपनियों के निदेशक मंडल में शामिल था. निदेशक मंडल का समूह कंपनी के लिए लंबी अवधि की योजनाएँ बनाने का काम करता है. स्ट्रॉस ने उन समूहों के साथ भी काम किया जो जरूरतमंदों की मदद करते थे. उन्होंने युवा छात्रों को कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की. 1902 तक, स्ट्रॉस का स्वास्थ्य खराब हो गया था. 26 सितंबर की रात को नींद में उनकी मृत्यु हो गई.

स्ट्रॉस की मौत की खबर सैन-फ्रांसिस्को के अखबारों में पहले पेज पर छपी. उनके अंतिम संस्कार में सैकड़ों लोग आए. उनमें वे अमीर लोग शामिल थे जिन्होंने कभी स्ट्रॉस के साथ व्यापार किया था और उनके कारखानों के मजदूरों भी थे. स्ट्रॉस के सम्मान में शहर के कुछ व्यवसाय उस दिन बंद रहे.

हालांकि वो महान व्यक्ति अब मर चुका था, लेकिन उसकी कंपनी चलती रही.

स्ट्रॉस के भतीजों ने व्यवसाय जारी रखा.

कुछ साल बाद, प्राकृतिक आपदा ने सैन-फ्रांसिस्को पर फिर मार की. शहर में एक और भयानक भूकंप आया. वो 1868 के भूकंप से भी अधिक तीव्र था. पूरे शहर में, गैस लाइनें फट गईं और भारी आग लगी. आग की लपटें कई दिनों तक जलती रहीं. जब अंततः आग समाप्त हुई, तब स्ट्रॉस कंपनी की सभी इमारतें नष्ट हो गईं थीं. स्ट्रॉस के भतीजों ने वही किया जो लेवी ने खुद किया होता. उन्होंने जल्द ही कंपनी का पुनर्निर्माण शुरू किया.

लेवी स्ट्रॉस एंड कंपनी फिर से मजबूत बनी. प्रसिद्ध नीली डेनिम पैंट में कुछ सालों में नए परिवर्तन भी आए. मूल पैंट में सामने बटन थे. बाद में इन बटनों की जगह एक ज़िप (चेन) लगाईं गई. कंपनी ने एक नया ट्रेडमार्क भी जोड़ा. पीछे की जेब पर अब एक छोटा लाल टैग लगाया गया. इस टैग पर कंपनी का नाम लिखा था.

डेनिम पैंट के कई नए नाम भी बने. 1942 में, कंपनी ने आधिकारिक तौर पर उन्हें "लेवीज़" कहा. बाद में, युवा लोग उन्हें "जीन्स" कहने लगे. यह नाम एक प्रकार के कपड़े से आया है जो कभी वर्कपैंट बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था.

चाहे वे कमर चोगा, नीली जीन्स या लेविस कहे जाते हों, स्ट्रॉस यह जानकर ख़ुश होंगे कि उनकी पैंट इतने लम्बे अर्से तक चली.

**समाप्त**